शोध-सारांश

'ये कोठेवालियाँ' और 'गाड़ीवालों का कटरा' में देह व्यापार का समाजशास्त्र

देह व्यापार पूरी दुनिया में आदिकाल से प्रचलित रहा है । वेश्याएँ सामंतवादी समाज में आभिजात वर्ग की कलात्मक अभिरुचि एवं पार्थिव गौरव प्रदर्शन का माध्यम थीं । आधुनिक यांत्रिक समाज में यह मानसिक विक्षेप भोगवादी प्रवृत्ति एवं निरन्तर बढ़ती हुई आंतरिक कुंठा के क्षणिक उपचार का द्योतक है।

भारत के प्राचीन ग्रन्थों में वेश्यावृत्ति का उल्लेख मिलता है। वेश्याएँ आर्थिक कारण से इस वृत्ति को अपनाती हैं। भारत में देह व्यापार अभी भी अनैतिक एवं गैर कानूनी माना जाता है। इस समय पूरे देश में देह व्यापार का कारोबार गैर कानूनी रूप में चल रहा है। समय-समय पर इसके कानूनी मान्यता को लेकर चर्चाएँ गर्म होती रहती हैं। वेश्याओं की वर्तमान समय में स्थिति बहुत ही खराब है। व्यवस्था में बदलाव के बावजूद वेश्याओं की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। देखा जाए तो उन्हें समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। 'ये कोठेवालियाँ' और 'गाड़ीवालों का कटरा' इन दोनों उपन्यासों में वेश्याओं को नजदीकी से देखा गया है और इनमें वेश्याओं की पीड़ा को दिखाया गया है कि किस प्रकार से ये वेश्याएँ देह व्यापार करने के लिए मजबूर होती हैं। वेश्यावृत्ति को रोकने के लिए कई कानून बनाए गए सही ढंग से लागू न होने के कारण उनकी सार्थकता अब तक साबित नहीं हो सकी है जिसके कारण से वेश्यावृत्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

अमृतलाल नागर और अलेक्सान्द्र कुप्रिन के उपन्यास में वेश्या जीवन को पूरे परिवेश के साथ दिखाया गया है। अपने शोध कार्य में मैंने पाया 'ये कोठेवालियाँ' उपन्यास में जहाँ वेश्याओं का शोषण भौतिक रूप से अधिक होता है वहीं 'गाड़ीवालों का कटरा' में वेश्याएँ भौतिक शोषण के साथ मानसिक

शोषण का अधिक शिकार होती हैं। दोनों ही उपन्यासों में बड़े ही मार्मिक ढंग से दिखाया गया है कि किस प्रकार से ये वेश्याएँ आर्थिक अथवा अन्य मजबूरी बस यह कार्य करती हैं। जबकि इस कार्य से मिले धन का अधिक हिस्सा उनके दलालों के हाथों में चला जाता है।

शोध में मैनें वेश्याओं की समस्याओं और उनके शोषण को मुख्य रूप से केन्द्रित किया है। जिसमें यह दिखाया गया है कि इस कार्य को करने के पीछे उनकी क्या-क्या मजबूरियाँ होती हैं। वेश्यावृत्ति में वेश्या बनी माँ की क्या-क्या समस्या होती है। उनका किस प्रकार से शोषण होता है और इन्हें किस प्रकार से व्यक्ति अपनी वासनापूर्ति का साधन मानते हैं। वैश्यावृत्ति में स्त्रियों की भावनाओं का कोई महत्व नहीं रहता है पुरुष अथवा ग्राहक अपनी कामवासना को पूरा करने अलावा उनसे कोई मतलब नहीं रखता है | दोनों उपन्यासों में दिखाया गया है कि देह व्यापार में लिप्त व्यक्ति गरीब की लड़कियों को बहला फुसलाकर उनके गाँव से निकालकर उन्हें शहर लाते हैं और वेश्यालय में ले जाकर बेच देते हैं। दलाल लोग इस तरह की ताक में रहते हैं कि कोई ना कोई गरीब परिवार उनके झांसे में आ जाये। आज भी समाज में मानवाधिकार की बातें बहुत होती हैं लेकिन दलाल बड़े आराम से अपना कार्य करते हैं पुलिस प्रशासन इसको खत्म करने में कोई दिलचस्पी नहीं रखता है | नब्बे प्रतिशत लड़कियाँ इस दलदल में जबरदस्ती या धोखे से लायी जाती हैं। ये अपनी इच्छा से काम नहीं करना चाहती असल में यही वेश्यावृत्ति के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं।